डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति माध्यमिक एवं उच्च–माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एंव विद्यार्थियों की अभिवृति का अध्ययन

(जयपुर जिले के सन्दर्भ में)

डॉक्अर ऑफ फिलौसफी (शिक्षा)

की उपाधि प्राप्ति हेतु प्रस्तुत संक्षिप्त

शोध–प्रारूप

शोधकर्त्ता

सुनीता भार्गव

पर्यवेक्षक

डॉ. प्रतिमा गुप्ता

प्रोफेसर

शिक्षा एंव शारीरिक शिक्षा विभाग

श्याम विश्वविद्यालय

लालसोट, दौसा, राजस्थान

2019

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1—3
2.	साहित्य का पुनरावलोकन	3—6
3.	शोध के उद्‌देश्य	6—7
4.	शोध का अध्ययन का क्षेत्र	8—9
5.	शोध प्ररचना	10
6.	निदर्शन पद्धति एवं न्यायदर्श चयन	10—.11
7.	अध्यायीकरण	12
8.	सन्दर्भ ग्रन्थ—सूची	13—15

परिचयः

आधुनिक युग कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी का युग हैऔर कम्प्यूटर हमारी शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कम्प्यूटर की मदद से छात्र अधिक सीख सकते हैं और वे अपनी तार्किक समस्याओं को बहुत आसानी से और भारी गति से हल कर सकते हैं। कम्प्यूटर आधारित शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक प्रतिस्पर्धी रोजगार बाजार में सम्पत्ति होगी इसलिए माध्यमिक स्तर पर कम्प्यूटर आधारित शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है और इस स्तर पर इसका तेजी से विस्तार हो रहा है। कम्प्यूटर आधारित शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उपयोगकर्त्ताओं के ज्ञान और रचनात्मकता को बढ़ाता है। जहाँ अस–कम्प्यूटर के प्रति नकारात्मक रवैया कम्प्यूटर के उपयोग को सीखने के रूप में प्रतिबंधित कर सकता है। कम्प्यूटर के प्रति नकारात्मक रवैये को कम्प्यूटर की चिंता भी कहा जाता है, इसलिए हम यहां देखते हैं कि कम्प्यूटर की चिंता भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यह एक बड़ी समयस्या है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में कम्प्यूटर की चिंता को कैसे दूर किया जाए। उच्च माध्यमिक स्तर पर कम्प्यूटर आधारित शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है और इस स्तर पर इसका तेजी से विस्तार हो रहा है।

आधुनिक मनोविज्ञान ने उपयोगकर्त्ता के रवैये और चिंता की भूमिका पर जोर दिया है, ये दोनों ऐसे कारक हैं जो व्यक्तियों के बीच कम्प्यूटर के ज्ञान को प्रभावित करते हैं। कम्प्यूटर के प्रतिचार प्रकार के दृष्टिकोण हैं– कम्प्यूटर की चिंता या भय, कम्प्यूटर के साथ काम करने का आत्मविश्वास, कम्प्यूटर पसन्द करना या कम्प्यूटर के साथ आनन्द लेना और वर्तमान या भविष्य के काम में कम्प्यूटर की कथित उपयोगिता। कम्प्यूटर के प्रति दृष्टिकोण की मुख्य और सबसे जरूरी समस्या यह है कि सभी छात्रों

के पास कम्प्यूटर उपयोग क्षमताओं के विभिन्न स्तर होत हैं, और एक बुनियादी कम्प्यूटर पाठयक्रम के माध्यम से सभी छात्रों की जरूरतों को पूरा करना बहुत मुश्किल होता है, इसलिए छात्रों को उनके कम्प्यूटर उपयोग के अनुसार समूहीकृत किया जा सकता है। स्तर और उनके स्तर के आधार पर कम्प्यूटर पाठयक्रम लें। इससे छात्रों को अपने कम्प्यूटर दृष्टिकोण में सुधार करने में मदद मिल सकती है। शोधकर्ताओं ने कम्प्यूटर आधारित शिक्षा और कम्प्यूटर सिस्टम की सफलता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के बीच एक मजबूत संबंध पाया है।

कम्प्यूटर आधारित शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण कम्प्यूटर उपयोगकर्ताओं की सीखने की प्रक्रिया और रचनात्मक को बढ़ाता है, जबकि नकारात्म दृष्टिकोण कम्प्यूटर के उपयोग को सीखने और शिक्षण उपकरण के रूप में बाधित कर सकता है। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए कम्प्यूटर अत्यंत सहायक है। वे अपने ज्ञान और रचनात्मक को बढ़ा सकते हैं। लेकिन इसके विपरीत कम्प्यूटर की चिंता भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कम्प्यूटर चिंता एक विचार विशिष्ट चिंता प्रकार है जो अक्सर एक बहुत ही विशिष्ट प्रकार की स्थिति में होती है।

यद्यपि किसी व्यक्ति की रचनात्मकता पूरी तरह या आंशिक रूप से उपन्यास पहचान के उत्पादन से जुड़ी हो सकती है और उस व्यक्ति की अंतदृष्टि और बाहरी घटक भी लोगों की रचनात्मकता के स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रचनात्मक एक व्यक्ति की क्षमता और नवीन उत्पादों, विचारों और रचनाओं का उत्पादन करने की क्षमता है जो अनिवार्य रूप से उपन्यास या नए हैं और निर्माता के लिए पहले अज्ञात हैं। किसी व्यक्ति की रचनात्मक को विकसित करने में कई कारक हो सकते हैं और इसका प्रभाव एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकता

है। एक उपकरण के रूप में कम्प्यूटर जो इस मुदे के दौरान योगदान देता है क्योंकि इसका उपयोग व्यवसाय और अकादमिक उदेश्य से राजमर्रा के साथी तक पूरी तरह से विकसित हो गया है। हमारा अध्ययन इस पहले पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करता है कि कम्प्यूटर माध्यमिक स्तर के छात्रों में क्या अंतर पैदा कर रहा है रचनात्मकता जो मौजूद या अनुपस्थित हो सकती है यदि छात्रों के कम्प्यूटर के संपर्क में नहीं है।

साहित्य का पुनरावलोकनः

पुस्तकें–

- जैन डॉ. गरिमा – स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा शिक्षण, युनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर–2007
- जॉन डब्ल्यू वेस्ट – ''रिसर्च एन एजकेशन'' प्रिटिंग हॉल इन्क इन्गल्वुड क्लिफ्स एन.जे. 1959
- कपिल एच. के – ''अनुसंधान की विधियाँ'' एच. पी. भार्ग बुक हाऊस आगरा, संस्करण 2001
- पालीवाल, डॉ. शिखा, पालीवाल, डॉ. यामिनी एवं जाटव, डॉ, पी. एल. – ''शारीरिक शिक्षा एवं योग'', राजस्थान प्रकाशन
- सिडाना, डॉ. अशोक कुमार – ''स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा शिक्षण'' शिक्षा प्रकाशन–2009
- सिंह, डॉ. होशियार एवं डॉ. सुशील कुमार – ''स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा'' निपुण प्रकाशन, 2019
- शैरी, डॉ. जी. पी. एवं शुक्ला, डॉ. सी. एस. – ''स्वास्थ्य शिक्षा'' विनोद पुस्तक मंदिर, 2009
- शर्मा आर. ए. – ''शिक्षा अनुसंधान'' आर.लाल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2007

- वेस्ट, डब्ल्यू जॉन– ''रिसर्च एन एजूकेशन'' हॉल प्रा. लि. नई दिल्ली सं. 1973,
- वेस्ट, डब्ल्यू जॉन– ''रिसर्च एन एजूकेशन'' प्रिन्टिग हॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि., नई दिल्ली, 2006

शोध ग्रंथ–

- उस्मान, ओ.एम. और अल्फ्रेडऋ के. ने ''अंडरस्टैंडिंग स्टूडेंट एटीटयूयड दू कम्प्यूटर एजकेशनः ए सर्वे ऑए एसएचएस इन द सुनयानी म्यूनिसिपैलिटी''
- शर्मा, एच. एल और सिंह, जे. ने ''ए स्टडी ऑफ एटिटयूड टू कम्प्यूटर एजुकेशन अमंग सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के संबंध में जेंडर, लोकेलिटी और एकेडमिक स्ट्रीम''
- कल्होत्रा, एस.के. ने 'जम्मू क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का एक तुलनात्मक अध्ययन''
- लता, एम. ने ''इंटरनेट के प्रति माध्यमिक छात्रों का दृष्टिकोण''
- कुटलुका, टी. ने ''ए स्टडी ऑन कम्प्यूटर यूसेस एंड एटिटयूड ऑन कम्प्यूटर्स ऑफ प्रॉस्पेक्टिव प्रीस्कूल टीचर''
- यादव, एस. और सिंह, एस.वी. (2017) स्नातक छात्रों के बीच कम्प्यूटर के प्रति सामाजिक क्षमता और दृष्टिकोण का एक तूलनात्मक अध्ययन, एसपीआईजे
- वैदा, एन (2017) जिला शौपियां में लड़कों और लड़कियों के बीच रचनात्मकता पर एक तुलनात्मक अध्ययन
- वासेके, पी.एम. (2016) चंद्रपुर तालुका में पुरूष और महिला वरिष्ठ कॉलेज के छात्रों की रचनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन उनकी उपलब्धि के संदर्भ में, इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम।
- विट्रो, टी.जे. (2016) पाठयचर्या में कम्प्यूटरों को एकीकृत करनाः छात्रों के कम्प्यूटर से संबंधित दृष्टिकोण में परिवर्तन, अप्रकाशित बी.एड़ ऑनर्स थीसिस, स्कूल ऑफ एजुकेशन, फिलंडर्स यूनिवर्सिटी, एडिलेड।

- विनर, एल और मोथे, जे (2017) कम्प्यूटर एजुकेशन एंड द डेड–शार्क सिंड्रोम, इन रशी, निक। (ईडी)। प्रोद्योगिकी आधारित शिक्षाः पठन का चयन। न्यूयॉर्क निकोलस पब्लिशिंग
- वॉग, एस.एल. और हनफी, ए (2017) मलेशियाई छात्र शिक्षक के बीच सूचना प्रोद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण में लिंग अंतर, विश्वविद्यालय पुत्र मलेशिया शैक्षिक प्रौद्योगिकी और समाज में एक केस स्टडी।

शौध–जर्नल्स–

- I JRAR. ORG, ESTD year : 2014, International Journal of research and Anlytical Reviews-2014
- Education Researcher (AREA)
- IJIRD ISSN 2278-0211-2019
- International Journal of Advanced Education and Research-2018
- International Journal of Research in Hindi-2020

पत्र–पत्रिकाएँ–

- “International Journal of Yoga”-2008
- “Journal of Yoga and Physical Therapy” -2011
- “Journal of Yoga and Meditation” – 2014
- “Journal of Yoga and Psychological Health” – 2018
- “Journal of Yoga and Physical Education” - 2018

वेबसाइट–

- https://www.yogajournal.com
- https://www.yogainternational.com

- https://www.yogaworks.com
- https://www.doyogawithme.com
- https://www.myyogaworks.com

शोध के उद्देश्य:

मेरे द्वारा इस विषय – ''डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति माध्यमिक एंव उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन'' पर किया जाने वाला शोध अध्ययन निम्नलिखित उदेश्यों से प्रेरित है–

1. डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. शिक्षा के मूल्य के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का डिजिटल आधारित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. शिक्षा के मूल्य के संबंध में उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का डिजिटल आधारित शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति चिंता के स्तर का अध्ययन करना।
6. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति चिंता के स्तर का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच डिजिटल आधारित शिक्षा और रचनात्मकता के प्रति अभिवृत्ति के बीच संबंध का निरीक्षण करना।

8. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच डिजिटल आधारित शिक्षा और रचनात्मक के प्रति अभिवृति के बीच संबंध का निरीक्ष करना।
9. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच रचनात्मक और डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति चिंता के बीच संबंध का निरीक्षण करना।
10. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच रचनात्मकता और डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति चिंता के बीच संबंध का निरीक्षण करना।
11. डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति छात्रों और शिक्षकों की अभिवृत्ति का निरीक्षण करके अध्ययन।
12. शिक्षकों की शैक्षिक पृष्ठभूमि और डिजिटल शिक्षा अधिगम के साथ उनके अनुभव के आकलन का अध्ययन।
13. डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रचार प्रसार में शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
14. डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रचार प्रसार में ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृति का अध्ययन करना।
15. डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
16. डिजिटल शिक्ष अधिगम के प्रति माध्यमिक एंव उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का क्षेत्र :

शोध अध्ययन का क्षेत्र जयपुर जिला रहेगा। जयपुर, पूर्व में जयपुर, भारतीय राज्य राजस्थान की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है। 2011 तक, शहर की आाबदी

3.1 मिलियन थी, जिसमें यह देश का दसवां सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया। जयपुर को इसकी इमारतों की प्रमुख रंग योजना के कारण गुलाबी शहर के रूप में भी जाना जाता है। इसे भारत के पेरिस के रूप में भी जाना जाता है, और सी वी रमन ने इसे महिमा का द्वीप कहा। यह राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से 268 किमी (267 मील) की दूरी पर स्थित है। जयपुर की स्थापना 1727 में आमेर के शासक कछवाहा राजपूत शासक जय सिंह द्वितीय ने की थी, जिनके नाम पर शहर का नाम पड़ा। यह आधुनिक भारत के शुरूआती नियोजित शहरों में से एक था, जिसे विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा डिजाइन किया गया था। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान, शहर जयपुर राज्य की राजधानी के रूप में कार्य करता था। 1947 में आजादी के बाद जयपुर को नवगठित राज्य राजस्थान की राजधानी बनाया गया।

जयपुर भारत में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है और दिल्ली और आगर (240 किमी, 149 मील) के साथ पश्चिम स्वर्ण त्रिभुज पर्यटन सर्किट का एक हिस्सा है। जयपुर शहर की स्थापना आमेर के राजा, महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने 18 नवम्बर 1727 को की थी, जिन्होंने 1699 से 1743 तक शासन किया था। जनसंख्या और पानी की बढ़ती कमी। जयपुर के लेआउट की योजना बनाते समय जय सिंह ने वास्तुकला और वास्तुकारों पर कई पुस्तकों से परामर्श किया। विद्याधर भट्टाचार्य के स्थापत्य मार्गदर्शन में, वस्तु शास्त्र और शिल्पा शास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर जयपुर की योजना बनाई गई थी। शहर का निर्माण 1726 में शुरू हुआ और प्रमुख सड़कों, कार्यालयों और महलों को पूरा करने में चार साल लगे। शहर को नौ ब्लॉकों में विभाजित किया गया था, जिनमें से दो में राज्य भवन और महल शामिल थे, शेष सात

जनता को आवंटित किए गए थे। विशाल प्राचीर का निर्माण किया गया था, जिसे सात गढ़वाले फाटकों से छेदा गया था।

सवाई राम सिंह प्रथम के शासक के दौरान, 1876 में एचआरएच अल्बर्ट एडवर्ड, वेल्स के राजकुमार (जो बाद में किंग एडवर्ड सप्तम, भारत के सम्राट बने) के स्वागत के लिए शहर को गुलाबी रंग में रंगा गया था। कई रास्ते अभी भी गुलाबी रंग में रंगे हुए हैं, जिससे जयपुर एक विशिष्ट रूप और विशेषण गुलाबी शहर। 19 वीं शताब्दी में, शहर का तेजी से विकास हुआ और 1900 तक इसकी आबादी 1,60,000 हो गई। विस्तृत बुलेवार्ड पक्के थे और इसका मुख्य उद्योग धातुओं और संगमरमर का काम था, जिसे 1868 में स्थापित एक कला स्कूल द्वारा बढ़ावा दिया गया था। शहर में तीन कॉलेज थे, जिनमें एक संस्कृत कॉलेज (1865) और एक लड़कियों का स्कूल (1867) शामिल था। महाराजा राम सिंह द्वितीय का शासनकाल। अगस्त 1981 में हवाई अड्डे सहित शहर के बड़े क्षेत्रो में बाढ़ आ गई, जिसके परिणामस्वरूप आठ लोगों की मौत हो गई और शहर की द्रव्यवती नदी को बहुत नुकसान हुआ। बाढ़ तीन दिनों के बादल फटने के कारण आई थी जिससे वार्षिक औसत से अधिक बारिश हुई थी।

शोध प्रचना :

मेरे द्वारा इस विषय– ''डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन'' पर किये जाने वाला शोध कार्य व्यवस्थित, प्रमाणिक एवं विश्वसनीय बन सके इसके लिए मैंने एक शोध प्रचना का निर्माण किया है। मेरे शोध विषय एवं शोध कार्य की प्रकृति को देखते हुए अन्वेषणात्मक एवं विवरणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया जायेगा। शोध से संबंधित इन शोध पद्धति के प्रकारों का उपयोग करते हुए शोध से संबंधित तथ्य एवं आकड़े संकलित करने के लिए प्राथमिक शोध प्रविधि के रूप में अवलोकन, साक्षात्कार–अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा। शोध कार्य को व्यवस्थित, प्रभावी, विश्वसनीय व तर्कपूर्ण बनाने के लिए द्वितीयक स्त्रोत के रूप में शोध विषय से संबंधित पूर्व शोध–ग्रन्थ, पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं की रिपोर्ट, विभिन्न वेब साइटों को प्रयोग में लाया जायेगा।

निदर्शन पद्धति एवं न्यायदर्श चयन :

शोध विषय– ''डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन'' की प्रकृति को देखते हुए गुणात्क तथ्य, सुचनाएँ एवं आंकड़े प्राप्त करने के लिए अध्ययन क्षेत्र (समग्र) जयपुर में उत्तरदाताओं के चयन हेतु उद्देश्यात्मक निदर्शन (Purposive Sampling) पद्धति का चयन करके निश्चित आकर में निदर्श (Sample) लिया जायेगा। इसके पश्चात् दैव निदर्शन (Random Sampling) पद्धति का प्रयोग करके छात्र उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा, जिससे न्यायदर्श (Sampling) में कोई कमी एवं भेदभाव न रहे।

शोध विषय का न्यायदर्श प्रारूप

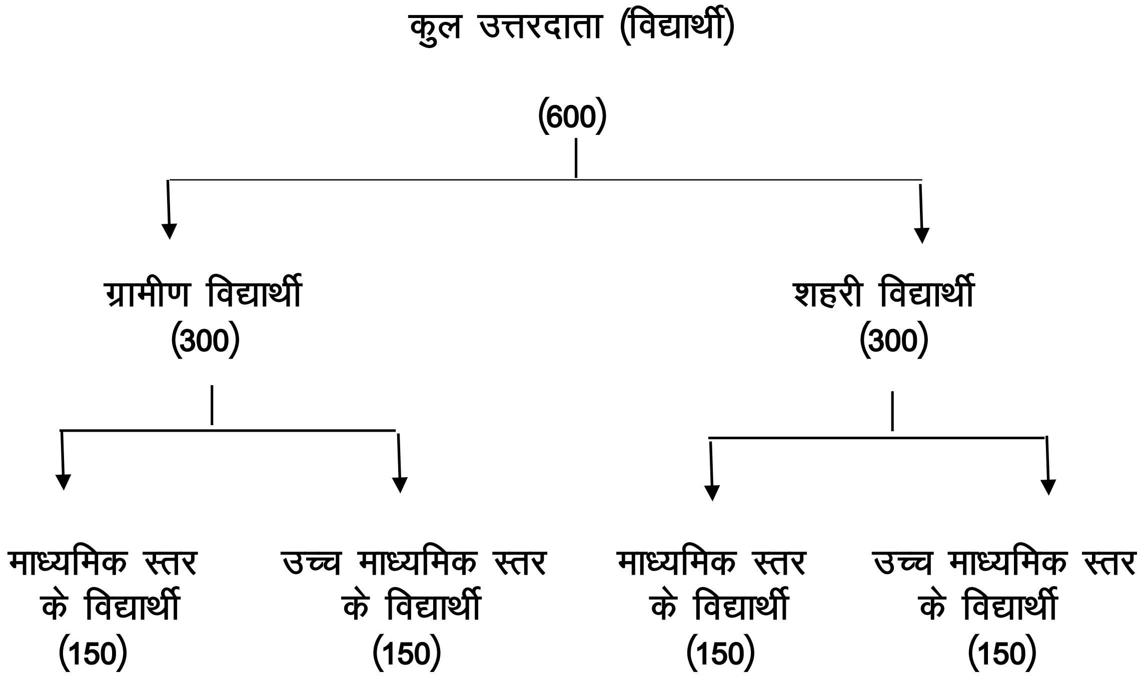

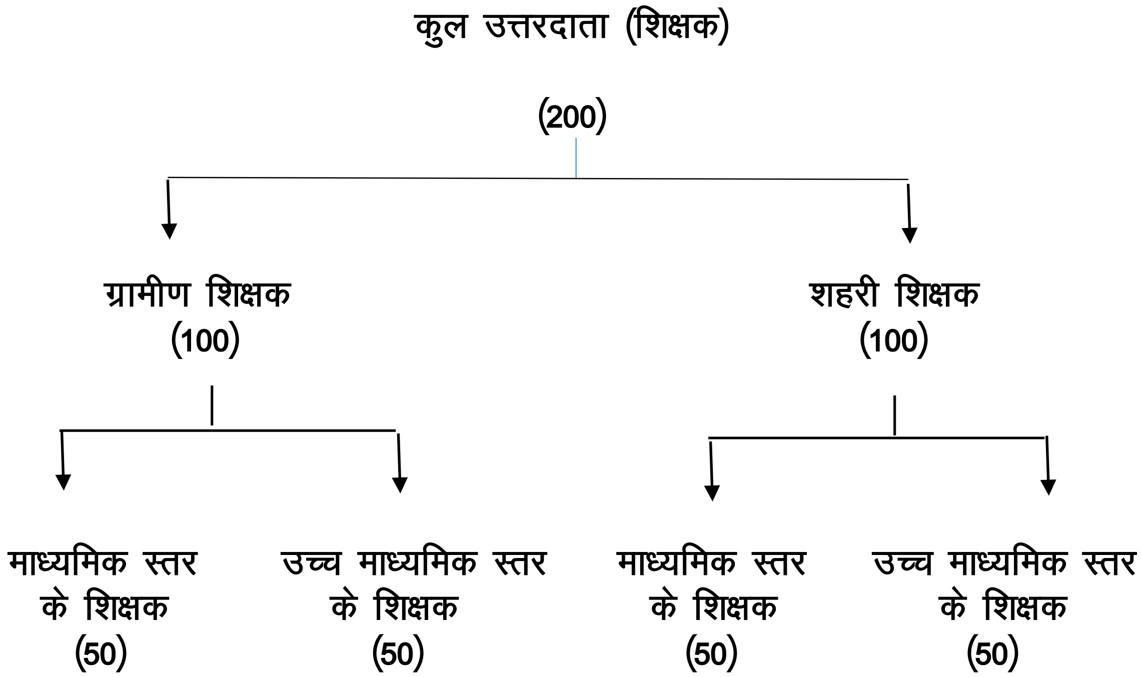

अध्यायीकरण (Chapterization):

मेरे द्वारा प्रस्तु शोध विषय– ''डिजिटल शिक्षा अधिगम के प्रति माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन'' से संबंधित सम्पूर्ण शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने हेतु निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत किया जायेगा–

अध्याय–प्रथम	–	शोध अध्ययन का परिचय
अध्याय–द्वितीय	–	साहित्य का पुनरावलोकन
अध्याय–तृतीय	–	डिजिटल शिक्षा अधिगम एवं अभिवृत्ति की अवधारणा
अध्यय–चतुर्थ	–	डिजिटल शिक्षा अधिगम एवं अभिवृत्ति की मापन प्रक्रिया– विश्लेषणात्मक अध्ययन
अध्याय पंचम	–	सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

पुस्तकें:–

- **जैन डॉ. गरिमा** – स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा शिक्षण, युनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर–2007
- **जॉन डब्ल्यू वेस्ट** – ''रिसर्च एन एजकेशन'' प्रिटिंग हॉल इन्क इन्गल्वुड क्लिफ्स एन.जे. 1959
- **कपिल एच. के** – ''अनुसंधान की विधियाँ'' एच. पी. भार्ग बुक हाऊस आगरा, संस्करण 2001
- **पालीवाल, डॉ. शिखा, पालीवाल, डॉ. यामिनी एवं जाटव, डॉ, पी. एल.** – ''शारीरिक शिक्षा एवं योग'', राजस्थान प्रकाशन
- **सिडाना, डॉ. अशोक कुमार** – ''स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा शिक्षण'' शिक्षा प्रकाशन–2009
- **सिंह, डॉ. होशियार एवं डॉ. सुशील कुमार –** ''स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा'' निपुण प्रकाशन, 2019
- **शैरी, डॉ. जी. पी. एवं शुक्ला, डॉ. सी. एस.** – ''स्वास्थ्य शिक्षा'' विनोद पुस्तक मंदिर, 2009
- **शर्मा आर. ए.** – ''शिक्षा अनुसंधान'' आर.लाल बुक डिपो मेरठ, संस्करण–2007
- **वेस्ट, डब्ल्यू जॉन**– ''रिसर्च एन एजूकेशन'' हॉल प्रा. लि. नई दिल्ली सं. 1973,
- **वेस्ट, डब्ल्यू जॉन**– ''रिसर्च एन एजूकेशन'' प्रिन्टिग हॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि., नई दिल्ली, 2006
- **उस्मान, ओ.एम. और अल्फ्रेडऋ के.** ने ''अंडरस्टैंडिंग स्टूडेंट एटीटयूयड दू कम्प्यूटर एजकेशनः ए सर्वे ऑए एसएचएस इन द सुनयानी म्यूनिसिपैलिटी''
- **शर्मा, एच. एल और सिंह, जे.** ने ''ए स्टडी ऑफ एटिटयूड टू कम्प्यूटर एजुकेशन अमंग सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के संबंध में जेंडर, लोकेलिटी और एकेडमिक स्ट्रीम''

- **कल्होत्रा, एस.के.** ने 'जम्मू क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का एक तुलनात्मक अध्ययन''
- **लता, एम. ने** ''इंटरनेट के प्रति माध्यमिक छात्रों का दृष्टिकोण''
- **कुटलुका, टी.** ने ''ए स्टडी ऑन कम्प्यूटर यूसेस एंड एटिटयूड ऑन कम्प्यूटर्स ऑफ प्रॉस्पेक्टिव प्रीस्कूल टीचर''
- **यादव, एस. और सिंह, एस.वी.** (2017) स्नातक छात्रों के बीच कम्प्यूटर के प्रति सामाजिक क्षमता और दृष्टिकोण का एक तूलनात्मक अध्ययन, एसपीआईजे
- **वैदा, एन (2017)** जिला शौपियां में लड़कों और लड़कियों के बीच रचनात्मकता पर एक तुलनात्मक अध्ययन
- **वासेके, पी.एम.** (2016) चंद्रपुर तालुका में पुरूष और महिला वरिष्ठ कॉलेज के छात्रों की रचनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन उनकी उपलब्धि के संदर्भ में, इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम।
- **विट्रो, टी.जे.** (2016) पाठयचर्या में कम्प्यूटरों को एकीकृत करनाः छात्रों के कम्प्यूटर से संबंधित दृष्टिकोण में परिवर्तन, अप्रकाशित बी.एड़ ऑनर्स थीसिस, स्कूल ऑफ एजुकेशन, फ्लिंडर्स यूनिवर्सिटी, एडिलेड।
- **विनर, एल और मोथे, जे** (2017) कम्प्यूटर एजुकेशन एंड द डेड–शार्क सिंड्रोम, इन रशी, निक। (ईडी)। प्रोद्योगिकी आधारित शिक्षाः पठन का चयन। न्यूयॉर्क निकोलस पब्लिशिंग
- **वॉग, एस.एल. और हनफी, ए** (2017) मलेशियाई छात्र शिक्षक के बीच सूचना प्रोद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण में लिंग अंतर, विश्वविद्यालय पुत्र मलेशिया शैक्षिक प्रौद्योगिकी और समाज में एक केस स्टडी।

शौध–जर्नल्स–

- I JRAR. ORG, ESTD year : 2014, International Journal of research and Anlytical Reviews-2014
- Education Researcher (AREA)
- IJIRD ISSN 2278-0211-2019
- International Journal of Advanced Education and Research-2018
- International Journal of Research in Hindi-2020

पत्र–पत्रिकाएँ–

- “International Journal of Yoga”-2008
- “Journal of Yoga and Physical Therapy” -2011
- “Journal of Yoga and Meditation” – 2014
- “Journal of Yoga and Psychological Health” – 2018
- “Journal of Yoga and Physical Education” - 2018

वेबसाइट–

- https://www.yogajournal.com
- https://www.yogainternational.com
- https://www.yogaworks.com
- https://www.doyogawithme.com
- https://www.myyogaworks.com